بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -19
Issue - 11-12

राह-ए-ईमान

नवम्बर-दिसम्बर
2017 ई

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

पृ.

1. पवित्र कुरआन 2
2. हदीस शरीफ.....3
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.....4
4. नज़्म हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 5
4. सम्पादकीय.....6
5. सारांश ख़ुत्बा जुम्अ: 10 नवम्बर 2017.....7
6. आंहज़रत सल्लल्लाहो के सहाबा की ईमान वर्धक घटनाएं.....11
7. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे (भाग 6).....16
8. कर न कर 24
9 गुलदस्ता..... 27
10 अरकाने इस्लाम.....27
11 नमाज़ 29
14 नमाज़ की शर्तें 30

***

सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

उप सम्पादक
मुहम्मद नसीरुल हक आचार्य
फरहत अहमद आचार्य
टाइप सेटिंग
आसमा तय्यबा
टाइटल डिज़ाइन
आर महमूद अब्दुल्लाह
मैनेजर
नवीद अहमद फ़ज़ल
कार्यालय प्रभार
तजम्मुल ख़ान
मुहम्मद असलम

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 150 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor SK. Mujahid Ahmad

पवित्र क़ुरआन

अल्लाह के पास बेहतरीन बदला है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَ الْبَنِيْنَ وَ الْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَ الْفِضَّةِ وَ الْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ وَ الْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ اللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ

(सूरत आले इमरान 15)

अनुवादः लोगों के लिए अपने आप पसन्द की जाने चीज़ों की अर्थात औरतों की और औलाद की और ढेरों ढेर सोने चांदी की और स्पष्ट निशान के साथ दाग़े हुए घोड़ों की और मवेशियों, और खेतों की मुहब्बत सुंदर रूप से कर के दिखाई गई है। यह सांसारिक जीवन का एक अस्थायी सामान है और अल्लाह वह है जिसके पास बहुत बेहतर लौटने का स्थान है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ इस आयत की तफ्सीर करते हुए फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला ने यह नक्शा खींचा है या उन लोगों की हालत बयान की है जो ख़ुदा तआला को भूल जाते हैं और दुनिया को प्राप्त करना ही उनका लक्ष्य होता है और जब इंसान ख़ुदा तआला को भूलता है तो फिर शैतान उस पर कब्ज़ा कर लेता है। यद्यपि ये सब चीज़ें ख़ुदा तआला की पैदा की हुई हैं और अल्लाह तआला की नेअमतों में से हैं और उनसे लाभ उठाना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने भी हमें बड़े स्पष्ट रूप से फरमाया कि दुनिया के कारोबार से अलग होना भी ग़लत है। शादियां करनी भी ज़रूरी हैं और ये सुन्नत है। इसी तरह दूसरे काम हैं। सहाबा भी क्या करते थे। कुछ सहाबा की करोड़ों की जायदादें थीं परन्तु वह दुनिया के चाहने वाले न थे। दुनिया पर गिरे हुए नहीं थे।"

(ख़ुत्बः जुम्अः दिनांक 8 दिसंबर 2017 ई.)

☆ ☆ ☆

हदीस शरीफ़

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम

عَنْ قَتَادَةَ سُئِلَ ابْنُ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ، ھَلْ کَانَ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَضْحَکُوْنَ؟ قَالَ : نَعَمْ، وَالْاِیْمَانُ فِیْ قُلُوْبِھِمْ اَعْظَمُ مِنَ الْجَبَلِ۔ وَقَالَ بِلَالُ ابْنُ سَعْدٍ اَدْرَکْتُھُمْ یَشْتَدُّوْنَ بَیْنَ الْاَغْرَاضِ وَیَضْحَکُ بَعْضُھُمْ اِلٰی بَعْضٍ فَاِذَا کَانَ اللَّیْلُ کَانُوْا رُھْبَانًا۔

हज़रत क़तादा वर्णन करते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से पूछा गया कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा कभी हँसते थे? उन्होंने जवाब दिया हां हँसते भी थे और ईमान उनके दिलों में पहाड़ से भी अधिक था और बिलाल बिन सअद वर्णन करते हैं कि मैंने उन्हें तीरंदाज़ी का अभ्यास करते और इस दौरान एक दूसरे पर हंसते भी देखा अर्थात वे बड़े ज़िन्दा दिल और हंसमुख थे। लेकिन जब रात होती तो वह ख़ुदा तआला के ज़िक्र में इस तरह खो जाते मानो वह दुनिया से विरक्त हैं। (मिशक़ात बाबुज़्ज़हक पृष्ठ 406)

عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ قَالَ : کَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ لَا یَقُوْمُ مِنْ مُصَلَّاہُ الَّذِیْ یُصَلِّیْ فِیْہِ الصُّبْحَ حَتّٰی تَطْلُعَ الشَّمْسُ فَاِذَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ قَامَ وَ کَانُوْا یَتَحَدَّثُوْنَ فَیَأْخُذُوْنَ فِیْ اَمْرِ الْجَاھِلِیَّۃِ فَیَضْحَکُوْنَ فَیَتَبَسَّمُ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ۔

हज़रत जाबिर बिन समरह वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ फजर के बाद सूरज निकलने तक मुसल्ला पर ठहरे रहते। जब सूरज निकल आता तो आप उठ जाते। उस समय हुज़ूर के सहाबा बैठे आपस में बातें करते रहते और जाहिलियत के दिनों की घटनाओं को याद करके हंसते और हुज़ूर भी उनकी बातें सुनकर मुस्कुराते। (मुस्लिम किताबुल फज़ाइल)

☆ ☆ ☆

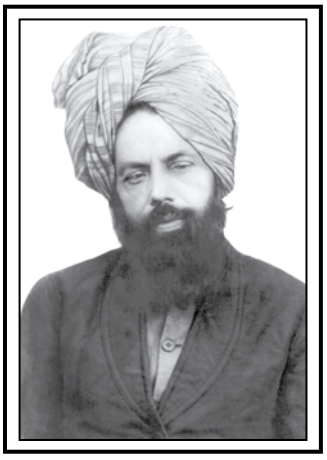

रूहानी ख़ज़ायन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

खुदा का अपने श्रद्धालुओं से व्यवहार

''वास्तव में वह ख़ुदा बड़ा ज़बरदस्त और सर्वशक्तिमान है जिसकी तरफ प्रेम और श्रद्धा से झुकने वाले कदापि नष्ट नहीं किए जाते। शत्रु कहता है कि मैं अपनी योजनाओं से उसको नष्ट कर दूँ, और विरोधी चाहता है कि मैं उनको कुचल डालूं मगर खुदा कहता है कि हे मूर्ख! क्या तू मेरे साथ लड़ेगा? और मेरे प्यारे को तू नष्ट कर सकेगा? वास्तव में पृथ्वी पर कुछ नहीं हो सकता मगर वही जो आसमान पर पहले हो चुका है। पृथ्वी का कोई हाथ उससे अधिक लम्बा नहीं हो सकता जितना कि वह आसमान पर लम्बा किया गया है अत: अत्याचार की योजनाएँ बनाने वाले सर्वथा मूर्ख हैं जो अपनी घृणास्पद और लज्जास्पद योजनाओं के समय अल्लाह की उस महान् सत्ता को याद नहीं रखते जिसके इरादे के बिना एक पत्ता भी गिर नहीं सकता। अत: वह अपने इरादों में सदैव असफल और लज्जित रहते हैं और उनके कुचक्रों से सत्यवादियों को कोई हानि नहीं पहूँचती अपितु अल्लाह के चमत्कार प्रकट होते हैं तथा मानव समाज में ईश्वर को पहचानने की शक्ति बढ़ती है। वह सर्वशक्तिमान और हर प्रकार से समर्थ अल्लाह यद्यपि इन भौतिक नेत्रों से दिखाई नहीं देता किन्तु अपने अलौकिक चमत्कारों से स्वयं को प्रकट कर देता है।''

(रूहानी ख़ज़ायन-भाग-13, पृष्ठ-19,20, किताबुल बरीया भूमिका 1-2)

''ख़ुदा आसमानों और ज़मीन का नूर (प्रकाश) है अर्थात् प्रत्येक प्रकाश जो ऊँचाई और नीचाई में दिखाई देता है, चाहे आत्माओं में है अथवा शरीरों में चाहे निजी है अथवा पार्थिव चाहे वह प्रकट रूप में है अथवा छुपे रूप में चाहे मानसिक है अथवा बाह्य, उसकी कृपा का दान है। यह इस बात की ओर संकेत है कि समस्त ब्रह्माण्ड के उस महान स्रष्टा और पालनहार अल्लाह की अपार बरकत प्रत्येक वस्तु पर छाई हुई है और कोई भी उस बरकत से वंचित नहीं। वही सभी फैज़ों का स्रोत और समस्त प्रकाशों का आदि कारण और समस्त कृपाओं का उद्गम स्थान स्त्रोत है। उसकी महान सत्ता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को स्थिर रखने वाली है तथा समस्त तुच्छ-महान के लिए शरण वही है जिसने प्रत्येक वस्तु को अस्तित्वहीन अन्धकार से बाहर निकाल कर अस्तित्व रूप प्रदान किया । उसके अतिरिक्त कोई ऐसी सत्ता नहीं है जो अपने आप में सुयोग्य और स्वयंभू हो अथवा उससे लाभ न उठाती हो अपितु पृथ्वी और आकाश, मनुष्य और अन्य जीवधारी तथा पत्थर और वृक्ष एवं आत्मा और शरीर सब उसी की कृपा से अस्तित्व में आए हैं।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-1 फुट नोट-191,192 बराहीन-ए-अहमदिया फुट नोट-11)

☆ ☆ ☆

किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दउल अनवार का

कलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

किस क़दर ज़ाहिर है नूर उस मब्दउल अनवार[1] का
बन रहा है सारा आलम[2] आईना अबसार[3] का ।
चांद को कल देख कर मैं सख्त बेकल हो गया,
क्योंकि कुछ कुछ था निशां उसमें जमाले यार[4] का।
उस बहारे हुस्न[5] का दिल में हमारे जोश है,
मत करो कुछ ज़िक्र हम से तुर्क या तातार का।
है अजब जलवा तेरी क़ुदरत का प्यारे हर तरफ,
जिस तरफ़ देखें, वही रह है तेरे दीदार[6] का।
चश्मए खुर्शीद[7] में मौजें[8] तेरी मशहूद[9] हैं,
हर सितारे में तमाशा है तेरी चमकार का।
तूने खुद रूहों पे अपने हाथ से छिड़का नमक,
इससे है शोरे मोहब्बत आशिक़ाने ज़ार[10] का।
क्या अजब तूने हर इक ज़र्रे में रखे हैं ख़वास[11],
कौन पढ़ सकता है सारा दफ़्तर इन असरार[12] का।
तेरी क़ुदरत का कोई भी इन्तिहा पाता नहीं,
किस से खुल सकता है पेंच इस उक़्दए दुश्वार[13] का।
खूबरूयों[14] में मलाहत[15] है तेरे उस हुस्न की,
हर गुलो गुलशन में है रंग उस तेरी गुलज़ार का।
चश्म मस्ते हर हसीं हर दम दिखाती है तुझे,
हाथ है तेरी तरफ हर गेसुए ख़मदार[16] का।

(रूहानी ख़ज़ायन भाग-2, पृष्ठ-52, सुर्मा चश्म आर्या, पृष्ठ-4)

1- मब्दउल अनवार = ज्योति का स्रोत 2- आलम = ब्रह्माण्ड 3-आईना अबसार का = ऑखों का दर्पण 4- जमाले यार = प्रेमी का सौन्दर्य 5-बहारे हुस्न = हुस्न की बहार 6- दीदार = दर्शन 7- चश्मए खुर्शीद = सूर्य कि किरणें 8- मौजें = लहरें 9- मशहूद = दिखाई देता है 10- आशिक़ाने ज़ार = प्रेम में दिवाने 11-ख़वास = विशेषताएँ 12- असरार = रहस्य 13- उक़्दए दुश्वार = कठिन समस्या 14- खूबरूओं = सुन्दर चेहरे वाले 15- मलाहत = सलोनापन 16- गेसुए ख़मदार = टेढ़ी(बलखाई) जुल्फें

सम्पादकीय

जवाब हो तो ऐसा

पवित्र क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अपनी यह आदत वर्णन की है कि वह जब बन्दों की हिदायत के लिए अपना कोई रसूल या मामूर भेजता है तो उस की सहायता और मदद करता है। दुश्मन लाख चाहे अल्लाह तआला अपने चुने हुए बन्दा की ऐसे रंग में मदद करता है कि अक्ल हैरान रह जाती है। अल्लाह तआला उन्हें अपनी तरफ से वह अक्ल और हिक्मत सिखाता है कि दुनिया हैरान रह जाती है।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी को अल्लाह तआला ने इस ज़माना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण में मसीह मौऊद का मक़ाम प्रदान फरमाया। आप ने इस्लाम की सच्चाइयों को पुनः दुनिया में प्रकट फरमाया। इस्लाम की सच्चाई को प्रकट करने के लिए आप ने कई पुस्तकें लिखीं। कई मुबाहसे किए। आप ने एक मुबाहसा 22 मई 1893 ई. से लेकर 5 जून 1893 ई. तक अमृतसर में (अब्दुल्ला आथम, पादरी हेनरी मार्टन क्लार्क इत्यादि) पादरियों के साथ किया। यह जंगे-मुक़द्दस के नाम से मशहूर है। उस समय एक अजीब वाकिया पेश आया। जिसका विवरण यह है कि -

''मुबाहसे के दौरान एक दिन ईसाइयों ने छुपाकर एक अन्धे, एक बहरे, और एक लंगड़े को मुबाहसे की जगह में लाकर एक तरफ़ बैठा दिया और फिर अपनी तक़रीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मुख़ातिब करके कहा कि आप मसीह होने का दावा करते हैं, लीजिए ये अन्धे, बहरे और लंगड़े आदमी हाज़िर हैं, मसीह की तरह इनको हाथ लगाकर अच्छा कर दीजिए। हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहब बयान करते हैं कि हम सब हैरान थे कि देखिए अब हज़रत साहब इसका क्या जवाब देते हैं। फिर जब हज़रत साहब ने अपना जवाब लिखवाना शुरू किया, तो फ़र्माया कि मैं तो इस बात को नहीं मानता कि मसीह इस तरह हाथ लगाकर अन्धों और बहरों एवं लंगड़ों को अच्छा कर देता था। इसलिए मुझ पर यह सवाल बहस का कारण नहीं बन सकता। हाँ आप लोग ज़रूर मसीह के चमत्कार इस रूप में स्वीकार करते हैं, और दूसरी तरफ़ आपका यह भी ईमान है कि जिस व्यक्ति में एक राई के बराबर भी ईमान है वह वही सब कुछ दिखा सकता है जो मसीह दिखाता था। इसलिए मैं आपका बड़ा शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे अंधों और बहरों एवं लंगड़ों की तलाश से बचा लिया। अब आप ही का तोहफ़ा आपके सामने पेश किया जाता है। अब अन्धे, बहरे और लंगड़े हाज़िर हैं। अगर आप में एक राई के बराबर भी ईमान है तो मसीह की सुन्नत (तरीक़े) पर आप उनको अच्छा कर दें । मीर साहब बयान करते हैं कि हज़रत साहिब ने जब यह फ़र्माया तो पादरियों के मुँह सूख गये और उन्होंने तुरन्त इशारा करके उन लोगों को वहाँ से भगा दिया।"

(हयाते तैयबा पृ. 12)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

सारांश ख़ुत्बा जुम्अः

सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,

दिनांक 10 नवम्बर 2017 ई. स्थान -बैतुल फुतुह लंदन,

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार और जिस स्तर के इंसाफ और न्याय को स्थापित करने के लिए मुसलमानों को हिदायत फरमाई है किसी अन्य धार्मिक किताब में ये स्तर मौजूद नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से, इस समय प्रत्येक स्तर पर मुसलमानों में ही एक ऐसा बड़ा वर्ग है, जो इंसाफ और न्याय की मांगों को पूरा नहीं करते हैं।

अतः हमने अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के अहद को पूरा करना है और आप के मिशन को पूरा करना है और इस्लाम के संदेश को दुनिया तक पहुंचाना है और तब्लीग़ का हक अदा करना है तो फिर सभी को बुलन्द अख़लाक़ को अपनाना होगा जो इस्लाम की शिक्षा है।

तश्हुद्द तऊज़ और सूरह फातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सूरत(अन्निसाः 136)(अल्माइदः 9)(अल्आराफः 182) आयतों की तिलावत फरमाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया

अल्लाह तआला ने जिस प्रकार और जिस स्तर के इंसाफ और न्याय को स्थापित करने के लिए मुसलमानों को हिदायत फरमाई है किसी अन्य धार्मिक किताब में ये स्तर मौजूद नहीं है। लेकिन दुर्भाग्य से, इस समय प्रत्येक स्तर पर मुसलमानों में ही एक ऐसा बड़ा वर्ग हैं, लीडरों में भी और उल्मा में भी जो इंसाफ और न्याय की मांगों को पूरा नहीं करते हैं। इसी तरह, घरों में सामान्य मुसलमानों में सामान्य मामलों के आम मामलों में आम तौर पर इंसाफ और न्याय की गुणवत्ता देखने में नहीं आती है जो ख़ुदा तआला ने स्थापित फरमाई हैं, जो एक मोमिन से अपेक्षित है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने तिलावत की गई आयतों का अनुवाद प्रस्तुत करते हुए फमराया कि

"अतः यह वह आदेश है न्याय की गुणवत्ता स्थापित करने का, निजी घरेलू मामलों में और सामाजिक मामलों में भी, कि जैसी भी अवस्था हो जाए इंसाफ और न्याय पर हमेशा स्थापित होना चाहिए। मोमिनों को यह आदेश है कि अल्लाह तआला के लिए और अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार मोमिन की गवाही होनी चाहिए और यह तभी हो सकता है जब अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास हो। ईमान की गुणवत्ता अत्यंत उच्च स्तर की और मज़बूत हो। इस बात पर इंसान क़ायम हो कि जो भी स्थिति मुझ पर हो मैंने न्याय पर मज़बूती से

स्थापित होना है और यह मजबूती तभी पैदा होती है या उसकी मजबूती का तभी पता लगेगा जब इंसान अपने ख़िलाफ भी गवाही देने के लिए तैयार हो। अपनी पत्नी और बच्चों के ख़िलाफ भी गवाही देने के लिए तैयार हो यदि आवश्यक हो तो अपने माता-पिता के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हो। निकटवर्ती रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही देने के लिए तैयार हो। फरमाया कि इच्छाओं का अनुकरण इंसाफ से दूर करता है यदि अपनी इच्छाओं का पालन करने लग गए तो इंसाफ और न्याय से दूर हो जाओगे।

आज कल समाज में कई समस्याएं इस लिए हैं कि इंसाफ और न्याय के मियार इस स्तर के नहीं है जो अल्लाह तआला चाहता है। आपकी बात को तोड़ कर पेश करना सामान्य है अफ़सोस इस बात का होता है कि कभी कभी हम में से भी कुछ लोग दुनियादारी और माहोल के प्रभाव में बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के ऐसी बातें कर जाते हैं जो तथ्यों से दूर होती हैं। अल्लाह तआला तो फरमाता है कि चाहे व्यक्तिगत या अपने माता-पिता का नुकसान भी हो तो भी कभी ऐसी बात न करो जो गोलमोल हो या किसी तरह भी यह धारणा पैदा हो कि तथ्यों को छिपाने की कोशिश की गई है। सच्ची गवाही देने से बचने की कोशिश की गई है। ये बातें हम रोज़ के मामलों में देखते हैं। उदाहरण के लिए, पति पत्नी के मामले हैं, कज़ा में कई मामले इस प्रकार के आते हैं जहां सच्चाई से काम नहीं लिया जाता। लेन-देन के मामले हैं, हम यह भी देखते हैं कि तथ्यों को वहां छिपाया जाता है। कुछ धर्म का ज्ञान रखने वाले और ज़ाहिरी तौर पर सेवा में आगे रहने वाले भी ऐसी हरकतें कर जाते हैं कि व्यक्ति परेशान हो जाता है कि ऐसे लोग भी इस तरह की बातें कर सकते हैं, जो ज़ाहिरी तौर पर बड़े विद्वान और धर्म का ज्ञान रखने वाले हैं और उनका अच्छा प्रभाव भी क़ायम है अल्लाह तआला तो फरमाता है कि अपने ख़िलाफ, अपने माता-पिता के ख़िलाफ, अपने निकटवर्ती रक्त संबंधों के ख़िलाफ भी हक को न छुपाओ। हक को बहरहाल प्रकट करो। ये लोग सिर्फ दोस्तियां निभाने के लिए या अपने स्वार्थों के लिए हक को छुपाते हैं या सच्ची गवाही देने से बचते हैं। और अगर सच्चाई स्पष्ट हो जाए तो अपनी बात के समर्थन के लिए उन्होंने तैय्यारी भी ख़ूब की होती है कि किस प्रकार इस से बचना होता है और क्या दलीलें देनी होती हैं।

लेकिन हमेशा याद रखना कि अल्लाह तआला फरमाता है कि जो कुछ भी तुम करते हो उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है। अल्लाह तआला को धोखा नहीं दिया जा सकता है। अल्लाह तआला फरमाता है इस दुनिया के लाभों को तुम प्राप्त कर सकते हो लेकिन अल्लाह तआला की पकड़ से यहां बच भी गए तो अगले जहान में पकड़े जाओगे। हमारे सारे कर्मों की ख़बर रखने वाला ख़ुदा वे सारे कर्म सामने रख देगा जिस में वह सारी बातें होंगी।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्ला तआला ने फरमाया कि

"फिर अपने समाज में इंसाफ और न्याय स्थापित करने के बाद, अल्लाह तआला ने मामिनों को यह भी आदेश दिया है कि अपने व्यक्तिगत सामाजिक और राष्ट्रीय मामलों में इंसाफ और न्याय के उच्च मानदंड स्थापित करना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, और अन्य क़ौमों से भी इंसाफ और न्याय का व्यवहार करते हुए इस के उच्च स्तर स्थापित करो। यदि दुश्मनों के साथ भी तुम ने इंसाफ और न्याय के स्तर स्थापित नहीं किए तो तुम तक्वा पर चलने वाले नहीं हो। अत: सूरह माइद: की आयत 9 है जो मैंने तिलावत की है इस का अनुवाद यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए इंसाफ के पक्ष

में गवाह बन जाओ और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें कभी इस बात पर आमादा न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक्वा के सब से क़रीब है और अल्लाह तआला से डरो। निस्संदेह अल्लाह तआला इस बात को हमेशा जानता है जो तुम करते हो।

कुछ जगह धार्मिक मतभेद होते हैं और इस वजह से दूसरे धर्मों वालों से दुर्व्यवहार भी कर जाते हैं तो ऐसे हालात में एक मोमिन का यह काम नहीं है कि क़ौमों और अन्य धर्मों के लोगों के दुर्व्यवहार का बदला उसी तरह ले और न्याय की मांगें पूरी न करें। इस बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल ने एक बार दर्स (व्याख्यान) में उल्लेख किया कि जैसे उस ज़माने में आर्य लोग मुसलमानों को नौकरियों में तंग करते थे, निकाल देते थे अगर वे ऐसा करें भी तो मुसलमान का काम नहीं है कि उनसे बदले ले। हम तभी इस आदेश का अनुसरण कर सकते हैं।

(उद्धिरत हकायकुल फुरकान जिल्द 2 पृष्ठ 85
तफसीर सुरह अलमाइदः आयत 9)

मोमिन का यह काम कभी नहीं है कि न्याय स्थापित न हो। मोमिन का कर्तव्य है कि वह न्याय स्थापित करे और तक्वा से काम ले और अपना मामला ख़ुदा तआला पर छोड़े, जो सब बातों से अवगत है। यह एक वास्तविक मोमिन का कार्य है कि वह अल्लाह तआला के आदेश को दृढ़ता से स्थापित करे और उस पर स्थापित हो और इस में कण मात्र भी लापरवाही न करे। यह सच्चे मुसलमान की निशानी है। इंसाफ के पक्ष में गवाह बनने का अर्थ ही यह है कि इस्लामी शिक्षा पर ऐसे अनुकरण करो इस तरह से पैरवी करो कि तुम्हारा अनुकरण या व्यावहारिक रूप लोगों के लिए, अन्य धर्मों के लिए, समाज के लिए एक उदाहरण बन जाए। अन्य क़ौमों के लिए एक उदाहरण बनें। आजकल मुसलमानों के अन्यायों के बारे में पश्चिमी देशों में बहुत कुछ कहा जाता है, जो लोग अपने धर्म वालों के साथ न्याय नहीं करते हैं वे ग़ैरों से क्या न्याय करेंगे। यह एक बड़ी त्रासदी है, और मुसलमान ही अपनी हरकतों के कारण इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। शासक तो जनता के लिए सही हैं लोग सरकार से लड़ रहे हैं, सरकारों से लड़ रहे हैं आबादी की आबादी क्रूरता का शिकार हो रही है और तबाह हो रही है तथाकथित इस्लाम के गिरोह अपने लोगों को भी मार रहे हैं और दूसरे देशों में भी हमारे लोगों को मार रहे हैं इस लिए हम भी अपना हक प्रयोग कर रहे हैं। हालांकि मुसलमानों को भी मुसलमान मार रहे हैं। हां दूसरों से मदद ज़रूर ले रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने न्याय के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घटनाओं का वर्णन करते हुए फरमाया कि

"फिर न्याय की स्थापना करते हुए एक यहूदी और एक मुसलमान के मामले का कैसे आप ने फैसला फरमाया। रिवायत में आता है कि एक यहूदी का एक सहाबी के ज़िम्मे चार दिरहम कर्ज़ था। जिस की समय सीमा समाप्त हो गई। उस यहूदी ने आकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शिकायत की कि इस आदमी के ज़िम्मे मेरा चार दिरहम कर्ज़ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस सहाबी को बुलाया जिन का नाम अब्दुल्लाह था और उन्हें कहा कि इस यहूदी का हक दे दो। हज़रत अब्दुल्लाह ने कहा कि उस हस्ती की कसम जिस ने आप को सच्चाई के साथ भेजा है मुझे कर्ज़ अदा करने की ताकत नहीं है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दोबारा उन्हें कहा कि इस आदमी का कर्ज़ अदा कर दो। अब्दुल्लाह ने फिर वही कहा और कहा कि मैंने इसे कह दिया है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें ख़ैबर भेजेंगे और माल ग़नीमत में से कुछ हिस्सा देंगे वापस आकर मैं आप का कर्ज़ अदा कर दूंगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

ने फरमाया कि इस का हक अदा करो। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब कोई बात तीन बार फरमा देते थे तो वह सम्पूर्ण फैसला समझा जाता था अत: अब्दुल्लाह उसी समय बाज़ार में गए। उन्होंने एक चादर तह बन्द के रूप में पहनी हुई थी और सिर का कपड़ा भी था। सिर का कपड़ा उतार कर उन्होंने तह बन्द के स्थान पर बांध लिया था और चादर चार दिरहम में बेच कर कर्ज़ अदा कर दिया।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 336 हदीस 15570)

तो यह मियार हैं इंसाफ और न्याय के और यही गुणवत्ता है जो हम हर स्तर पर स्थापित करेंगे तो इस ज़माने में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मानने वालों में शामिल होंगे। और वह उद्देश्य जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भव का है उसे पूरा करने वाले होंगे। आप इस्लाम की शिक्षाओं को फैलाने और दुनिया को दिखाने के लिए भेजे गए थे ताकि लोग अधिक से अधिक आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झण्डे के नीचे जमा हों। और यह काम उसी समय किया जा सकता है जब हम सच्चाई के साथ दुनिया को हिदायत करें, वहां हक के साथ अपनी इस शिक्षा के साथ न्याय स्थापित करें। अत: सूरह अल्आराफ की जो आयत मैंने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने इस बात का आदेश दिया है इस का अनुवाद यह है कि जिन्हें हम ने पैदा किया है उन में से ऐसे लोग भी हैं जो हक से साथ लोगों को हिदायत देते थे और इसी के माध्यम से इंसाफ करते थे।

हिदायत देने वाले हमेशा रहे हैं जो हक और इंसाफ की बात करते हुए हिदायत दे रहे हैं और आज भी ऐसे लोग कामयाब होंगे जो हक के साथ हिदायत देने वाले हैं और इंसाफ करने वाले हैं। जब इंसान ख़ुद हिदायत पर स्थापित न हो तो दूसरों को क्या हिदायत देगा। जब तक ख़ुद इंसान न्याय पर स्थापित न हों तो दूसरों को क्या न्याय दे सकेगा।

अत: हमने अगर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के अहद को पूरा करना है और आप के मिशन को पूरा करना है और इस्लाम के संदेश को दुनिया तक पहुंचाना है और तब्लीग़ का हक अदा करना है तो फिर इसी नियम के अनुसार सारी उच्च नैतिकता को अपनाना होगा जो इस्लाम की शिक्षा है, जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपदेश फरमाए हैं, जिनके बारे में हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है कि यह करो। अगर हमारी गवाहियाँ हक और न्याय के अनुसार नहीं हैं, यदि हमारे घरेलू और सामाजिक संबंध आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरादों के अनुसार नहीं हैं, तो हमारे दिल दुश्मनों के लिए भी द्वेष और हसद से पवित्र नहीं हैं, तो फिर हमारी तब्लीग़ वास्तविक तब्लीग़ नहीं होगी। हमारी परिस्थितियों और हमारे न्याय के मानकों को देखकर ग़ैर हमें कहेंगे कि पहले ख़ुद तो हिदायत का पालन करो। पहले ख़ुद तो न्याय को अपने परिवेश में लागू करो और फिर हमें कहना। अत: बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, जो हर अहमदी की है कि अपने कर्म से तब्लीग़ के रास्ते खोलें जो तब्लीग़ के रास्ते हमारे कर्म से खुलेंगे, जो लोग इस्लाम से हमारे कर्म को देखते हुए परिचय प्राप्त करेंगे वह इस्लाम के गुणों से परिचय प्राप्त किए बिना रह नहीं सकेंगे।

अल्लाह तआला करे कि हम अल्लाह तआला के आदेशों पर चलते हुए अपनी ज़िन्दगियों को ढालने वाले हों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के हक को पूरा करने वाले हों और हम दूसरों के लिए मार्गदर्शन और न्याय का नमूना बनने वाले हों।

☆ ☆ ☆

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के उच्च मक़ाम, विनम्रता और उच्च आचरण की ईमान वर्धक घटनाएं।

अल्लाह सहाबा से और सहाबा अल्लाह से राज़ी हो गए।

अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की प्रशंसा में फरमाया है कि

وَ السّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ وَ اَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ(सूरह अत्तौब: 100)

और मुहाजरीन और अंसार में से बढ़त ले जाने वाले और वे लोग जिन्होंने अच्छे कर्मों के साथ उनका पालन किया अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो गया और वे उससे राज़ी हो गए और उसने उनके लिए ऐसी जन्नतें तैय्यार की हैं जिन के दामन में नहरें बहती हैं और वे सदैव उन में रहने वाले हैं ये बहुत महान सफलता है।

मेरे सहाबा सितारों की तरह हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने आप के सहाबा के बारे में बताया कि इनके अनुसरण से हिदायत प्राप्त होगी।

एक हदीस में आता है। हज़रत उमर रज़ि अल्लाह तआला ब्यान करते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह फरमाते हुए सुना। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि मैंने अपने सहाबा के मतभेद के विषय में अल्लाह तआला से सवाल किया तो अल्लाह तआला ने मेरी ओर वह्यी की कि हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तेरे सहाबा का मेरे निकट ऐसा स्थान है जैसे आसमान में सितारे हैं कुछ कुछ से चमकदार होते हैं लेकिन प्रकाश प्रत्येक में मौजूद होता है। अत: जिस ने तेरे किसी सहाबी का अनुकरण किया मेरे निकट वह हिदायत पाने वाला होगा। (अल्लाह तआला के निकट वह हिदायत पाने वाला होगा।)

(मिरकातुल मफ़ातीह शरह मिशक़ात जिल्द 11 पृष्ठ 162-163 हदीस 6018)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अवसर पर अपने सहाबा के मुक़ाम का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि मेरे सहाबा के बारे में (कुछ कहने सा पहले) अल्लाह तआला के भय से काम लिया करो। उन्हें लांछन का निशाना न बनाना। जो आदमी उन से मुहब्बत करेगा तो वास्तव में मेरे प्यार के कारण ऐसा करेगा और जो व्यक्ति उन से द्वेष करेगा करेगा जो वास्तव में मुझ से द्वेष के कारण से उन से द्वेष करेगा। जो आदमी उन को दु:ख देगा उसने मुझे दु:ख दिया और जिसने मुझे दु:ख दिया उसने अल्लाह तआला को दु:ख दिया और जिसने अल्लाह तआला को दु:ख दिया और नाराज़ किया तो जाहिर है कि वह अल्लाह तआला की गिरफ्त में है। "

(सुनन अत्त-तिरमज़ी अबवाबुल मनाकिब हदीस 3862)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो के विनय, विनम्रता की एक और घटना।

एक बार हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह की हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के साथ तकरार हो गई जो नाराज़गी तक लंबी बहस हो गई। उनकी आवाज़ें उंची हो गईं होंगी इसके बाद जब बात समाप्त हो गई तो हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के पास गए और क्षमा चाही की अधिक बहस में आवाज़ शायद कुछ ज्यादा ऊंची हो गई होगी। कड़े शब्द हो गए होंगे। लेकिन हज़रत उमर रज़ि अल्लाह ने माफ करने से मना कर दिया इस पर हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह घटना वर्णन की और अर्ज़ किया कि उसकी माफी के लिए मैं आपकी सेवा में हाज़िर हुआ हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला माफ फरमाए। कुछ ही समय बाद, हज़रत उमर रज़ि अल्लाह को लज्जा महसूस हुई। शर्मिंदगी हुई। एहसास हुआ कि ग़लती हो गई थी और वह भी हज़रत अबूबकर रज़ि अल्लाह के घर गए कि उनसे क्षमा करें। वहां देखा तो घर में नहीं थे। हज़रत उमर भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। इन्हें देखकर, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा नाराज़गी से लाल हो गया। यह देखकर कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत उमर रज़ि अल्लाह पर बड़ी नाराज़गी है। हज़रत अबु बकर रज़ि अल्लाह घुटनों के बल बैठ कर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से विनती करने लगे कि ग़लती मेरी थी आप उम्र को माफ कर दें।

(सही अल-बुख़ारी हदीस 3661)

यह थी आप की नम्रता और अल्लाह तआला का डर और फिर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह भी शर्मिंदा थे और फिर माफी मांगने आए थे। दोनों तरफ से शर्मिन्दगी थी। यह वह पवित्र समाज था जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्थापित किया था और इसमें रहने वाले अल्लाह तआला की प्रसन्नता को पाने वाले बने।

हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहो अन्हो के विनय, विनम्रता की एक और घटना।

हज़रत उमर रज़ि अल्लाह की विनम्रता की एक घटना का उल्लेख यूं मिलता है कि एक व्यक्ति ने हज़रत उमर रज़ि से फरमाया कि आप हज़रत अबूबकर रज़ि से अच्छे हैं। इस पर हज़रत उमर रज़ि अल्लाह रोने लगे और फरमाया कि ख़ुदा की कसम हज़रत अबू बकर की एक रात और एक दिन ही उमर और उसकी औलाद की पूरी ज़िन्दिगी से बेहतर है। फरमाया किया तुम्हें इस रात और दिन का हाल सुनाओं? पूछने वाले के यह कहने पर कि हां सुनाएं। आपने फ़रमाया कि उनकी रात तो वह थी जिस रात नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हिजरत करके जाना पड़ा और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहो अन्हो ने आपका साथ दिया और उनन का दिन वह था जब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वफात पा चुके और अरब वासी नमाज़ और ज़काता का इन्कार करने वाले हो गए। उस समय उन्होंने मेरे सुझाव के विपरीत जिहाद का इरादा किया और अल्लाह तआला ने उन्हें इस में सफल कर के साबित कर दिया कि वह सच्चाई पर थे।

(कनज़ुल उम्माल किताबुल जिल्द 12 पृष्ठ 493-494 हदीस 35615)

हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह- धर्म के लिए बे इन्तहा कुरबानी करने वाले।

फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक और महान सहाबी हज़रत उसमान थे जो तीसरे ख़लीफा भी थे। आपका रिशतेदारों से उत्तम व्यवहार और आपके जीवन की कई विशेषताएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। हज़रत आयशा फरमाती हैं कि हज़रत उसमान सबसे बढ़कर रिश्तेदारों का ध्यान रखने वाले और

सबसे बढ़कर अल्लाह तआला से डरने वाले थे। और धर्म के लिए भी कई कुरबानियां करने वाले थे

(अलअसाबा फी तमीज़ुस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 378)

जब मस्जिदे नबवी के विस्तार का मामला आया तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आसपास के जितने मकान हैं उन्हें मस्जिद में जोड़ लिया जाए। ज़ाहिर है वे घर लोगों से ख़रीदना था उस समय हज़रत उसमान ने आगे बढ़कर अर्थात तुरंत अपने आप को पेश किया कि मैं यह खरीदता हूं और पंद्रह हज़ार दिरहम देकर वह जगह ख़रीद ली। मुसलमानों को पानी की कठिनाई का सामना करना पड़ा। एक यहूदी का कुआं था वहाँ से पानी लेने में दिक्कत थी तो आप ने यहूदी से मुंह मांगी कीमत पर वह कुआं ख़रीद कर मुसलमानों के लिए पानी की व्यवस्था की।

(सुनन अन्निसाई हदीस 3637-3638)

हज़रत अली रज़ि अल्लाह के उच्च आचरण का नमूना

फिर हज़रत अली रज़ि अल्लाह तआला अन्हो हैं। अमीर मुआविया ने किसी से हज़रत अली के गुण वर्णन करने के लिए कहा। उस ने कहा आप सुन लेंगे जो मैं वर्णन करूंगा। उन्होंने कहा ठीक है मैं सुन लूंगा। ज़ाहिर है और हम जानते हैं कि उनका विरोध चल रहा था। उसने कहा कि अगर सुनना है तो सुनें कि वह उच्च मनोबल और मज़बूत शक्ति के मालिक थे। निर्णायक बात बोलते और न्याय से निर्णय करते उनकी तरफ से ज्ञान का स्रोत फूटता और उन की हिक्मत प्रत्येक तरफ टपकती। दुनिया और उसकी रौनकों से भय महसूस करते और रात और उसके तनहाई से प्रेम करते अर्थात बजाय दुनियादारी में शामिल होने के लिए रातों को इबादत करना उनकी पसंदीदा चीजें थीं। कहने लगे कि वह बहुत रोने वाले बहुत ध्यान से ग़ौर करने वाले थे। वह हम में हमारे जैसे ही रहते थे। बहुत सरल जीवन था कहते हैं कि ख़ुदा की कसम, हम उन के साथ मुहब्बत तथा निकटता के सम्बन्ध के इलावा उन के रौब के कारण बात करने से रुकते थे। खुल कर बात नहीं कर सकते थे। वह धार्मिक लोगों का सम्मान करते थे और यतीमों को अपने पास स्थान देते थे। ताकतवर को उस के झुठे धारणा पर अवसर न देते थे। अगर कोई झूठा है और उस ने झूठी बात धारण की है, उस में लालच है लालच से लाभ उठाना चाहता है तो इस का उस को अवसर न देते थे। वहीं पकड़ लेते थे। और कमज़ोर आप के इंसाफ से निराश न होता था। ये हज़रत अली रज़ि अल्लाह के गुण थे। यह सुन कर हज़रत अमीर माविया ने भी कहा कि तुम सच कहते हो और रो पड़े।

(अल्इसतियाब फी मअरिफतिल सहाबा जिल्द 3 पृष्ठ 208-209)

बहुत अधिक मेहमान नवाज़ी करने वाले तलहा बिन उबैदुल्लाह

तारीख़ में एक सहाबी का उल्लेख मिलता है जिसका नाम तलहा बन उबैदुल्लाह था। आप भी एक अमीर आदमी थे और अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करते थे। एक बार अपनी संपत्ति का एक हिस्सा सात लाख दिरहम में हज़रत उसमान को बेचा और सब माल अल्लाह तआला की राह में खर्च कर दिया।

(अत्तबकातुल कुबरा जिल्द 3, पृष्ठ 117 मुद्रित दारुल इहया अत्तुरास अरबी बैरूत 1996 ई)

मेहमान नवाज़ी भी उन का एक विशेष गुण था। एक बार एक कबीला के तीन ग़रीब आदमियों ने इस्लाम स्वीकार किया तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा "सहाबा में से कौन इन की

देखभाल की ज़िम्मदारी लेता है" हजरत तलहा ने ख़ुशी से इन की ज़िम्मेदारी ले ली। और तीनों को अपने घर ले गए और वहीं ठहराया और मेहमानी करते रहे यहां तक कि स्थायी घर का आदमी बना लिया। कहते हैं कि यहां तक कि मौत ने उन्हें आप से जुदा किया।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 1 पृष्ठ 446 हदीस 1401)

एक ख़ूबी जो पत्नियों से संबंध रखती है, पतियों से संबंध रखती है वह भी आप की एक पत्नी बयान करती हैं कि हज़रत तलहा हंसते मुस्कुराते घर वापस आते। बहुत काम थे। व्यस्त थे। सब कुछ था जब वे घर आते तो इस प्रकार की शक्ल बना कर नहीं आते थे कि घर वाले डर कर एक ओर कोने में लग जाएं हंसते मुस्कराते घर वापस आते और हंसमुख बाहर जाते थे। परिवार वालों के साथ हमेशा अच्छा व्यवहार करते थे। हमेशा ख़ुश रहते थे और यह नहीं कि घर में अन्य स्वभाव है और बाहर अन्य है। कहती हैं कि कुछ मांगो तो दे देते थे कभी कंजूसी नहीं करते थे और खामोश रहो तो मांगने का इंतज़ार नहीं करते थे अर्थात यह नहीं कि मांगो तभी मिलना है बल्कि जो ज़रूरतें होती थीं ख़ुद देखते भी रहते थे और कोशिश करते थे कि मैं किसी प्रकार घर वालों की ज़रूरतें पूरी करूं। चार बीवियां थीं। चारों बड़ी ख़ुश थीं। कहती हैं कि नेकी करो तो शुक्र करने वाले होते थे। और ग़लती करो तो माफ कर देते थे।

(कन्ज़ुल उम्माल जिल्द 12 पृष्ठ 198-199 हदीस 36592)

यह दो नियम हैं जो घरों की शान्ति का कारण बनते हैं जो पति पत्नि के रिश्तों को मज़बूत करते हैं अत: यह भी हमारे लिए एक नमूना है।

साद बिन मुआज़- आज्ञापालन का उच्चम नमूना।

फिर साद बिन मुआज़ जो अंसारी थे उन्होंने जंगे बद्र वाले दिन अंसार का प्रतिनिधित्व करते हुए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंसार की तरफ से जो आशा थी उस पर आप पूरा उतरे और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल हम आप पर ईमान लाए और पुष्टि करते हैं कि आप की शिक्षा सही है, और हमने आपके साथ एक मज़बूत वादा किया कि हम हमेशा आप की बात सुनकर शीघ्र इताअत करेंगे। अत: है अल्लाह के रसूल! आप का जो इरादा है उसके अनुसार आगे बढ़ें इन्शा अल्लाह आप हमें अपने साथ पाएंगे। यदि आप हमें समुद्र में कूदने के लिए हिदायत करते हैं, तो हम इसमें कूदेंगे और हम में से कोई भी पीछे नहीं रहेगा और हम दुश्मन से मुकाबला करने में घबराते नहीं। और हम डट कर मुकाबला करना ख़ूब जानते हैं। हमें पूरी आशा हैं कि अल्लाह तआला आप को हम से वह सब कुछ दिखाएगा जिस से आप की आंखें ठण्डी होंगी। अत: आप जहां चाहें हमें ला जाएं।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 421 बाब गज़वह बद्र बैरूत 2001 ई)

अत: ये लोग थे जिन्होंने अपने वादे पूरे किए और फिर अपने नमूने बनाए और अल्लाह तआला भी उनसे राज़ी हुआ। ये कुछ सहाबा के नमूने हैं। तारीख़ तो उन के नमूनों से भरी पड़ी है। ये लोग हैं जो हमारे लिए अनुकरण योग्य हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ईमानवर्धक वर्णन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा के बारे में फरमाते हैं कि

"इंसाफ की नज़र से देखा जाए कि हमारे हादी

अकमल के सहाबा ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए क्या कुरबानियां कीं। निर्वासित हुए, अत्याचार सहे, विभिन्न प्रकार की पीड़ाएं सहन कीं परन्तु वफादारी और सच्चाई के साथ कदम आगे बढ़ाते गए। अत: वह क्या बात थी जिस ने उन्हें ऐसा वफादार बना दिया? वह सच्ची ईलाही मुहब्बत का उत्साह था, जिसकी रोशनी उनके दिल पर पड़ चुकी थी। इस लिए चाहे किसी नबी के साथ मुकाबला कर लिया जाए आपकी शिक्षा, धैर्य, अपने अनुयायियों को दुनिया से दूर हटा देना, बहादुरी से सच्चाई के लिए ख़ून बहा देना,इस की तुलना कहीं न मिल सकेगी।" फरमाते हैं कि "यह स्थान आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा का है और उनमें जो आपसी प्रेम और मुहब्बत था उसका नक्शा (कुरआन शरीफ में) दो वाक्यों में उल्लेख किया है। وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ (अल्-अंफाल : 64)। अर्थात जो प्रेम उनमें है वह कभी पैदा न होता चाहे सोने का पहाड़ खर्च कर भी दिया जाता है। " आप फरमाते हैं कि "अब एक और जमाअत मसीह मौऊद की है जिसने अपने अन्दर सहाबा का रंग पैदा करना है। साहबा की तो वह पवित्र जमाअत थी जिस की प्रशंसा में कुरआन शरीफ भरा पड़ा है।" फरमाते हैं "क्या आप लोग ऐसे हैं?" जब ख़ुदा कहता है कि हज़रत मसीह के साथ वे लोग होंगे जो सहाबा के साथ कंधे से कंधा मिला कर चलेंगे। सहाबा तो वे थे जिन्होंने अपनी संपत्ति, अपना देश सच्चाई की राह पर क़ुरबान कर दिया। और सब कुछ छोड़ दिया। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो का मामला अक्सर सुना होगा। एक बार जब ख़ुदा की राह में माल देने का आदेश दिया गया था, तो घर की कुल संपत्ति ले आए जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर में क्या छोड़ आए तो फरमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर छोड़ आया हूँ।"आप फरमाते हैं कि "रईस मक्का हो और कंबल पहने हुए"। (हज़रत अबू बकर का स्थान यह था कि मक्का का रईस थे। जब मुसलमान हो गए तो कंबल पहने हुए।) "ग़रीबों का लिबास पहने हुए। ये समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा के रास्ते में शहीद हो गए। उनके लिए तो यही लिखा है कि तलवारों के नीचे जन्नत है, लेकिन हमारे लिए तो इतनी कठिनाई नहीं है क्योंकि यज़उल हर्ब हमारे लिए आया है। अर्थात महदी के समय लड़ाई नहीं होगी।"

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पेज 42, 43 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

☆ ☆ ☆

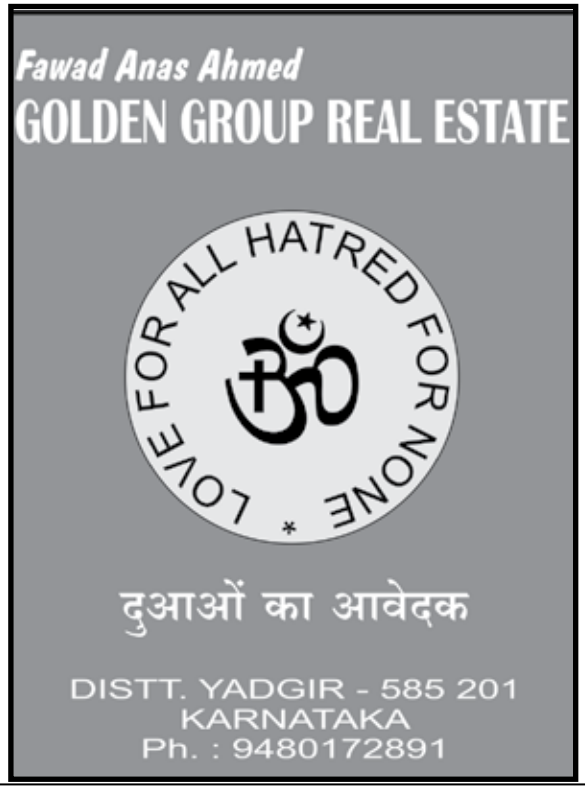

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कारनामे

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो)

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री) **(भाग-6)**

क़ुर्आन के बारे में फैली हुई ग़लतफ़हमियों का दूर करना

क़ुर्आन करीम के बारे सें बहुत सी ग़लत फहमियाँ लोगों में पैदा हुई थीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें भी दूर किया। उदाहरण के तौर पर:-

(1) कुछ मुसलमानों को यह ग़लती लगी हुई थी कि कुरआन करीम में तब्दीली हो गई है और उसके कुछ भाग छपने से रह गए हैं। आपने इसका खण्डन किया और बताया कि क़ुर्आन करीम कामिल (पूर्ण) किताब है। मनुष्य की जितनी आवश्यकताएँ धर्म से सम्बन्धित हैं वह सब इसमें बयान कर दी गई हैं। यदि इसके कुछ पार: या भाग खो गए होते तो इसकी शिक्षा में अवश्य कोई कमी होनी चाहिए थी और विषय का क्रम बिगड़ जाना चाहिए था। मगर न इसकी शिक्षा में दोष है और न इसके क्रम में ग़लती। जिससे ज्ञात हुआ कि क़ुर्आन करीम का कोई भाग नहीं छूटा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं क़ुर्आन ने दावा किया है और चैलेन्ज दिया है कि उसमें सारी अख़्लाक़ी और रूहानी विशेषताएँ मौजूद हैं। यदि इसका कोई हिस्सा ग़ायब हुआ होता तो अवश्य था कि कुछ आवश्यक अख़्लाक़ी या रूहानी बातों के सम्बन्ध में इसमें कोई आदेश न मिलता। लेकिन ऐसा नहीं है, इसमें रूहानी ज़रूरत का हर इलाज मौजूद है। यदि यह समझा जाए कि क़ुर्आन करीम का एक हिस्सा ग़ायब होने के बावजूद उसके अर्थों में कोई कमी नहीं आई, तो फिर मानना पड़ेगा कि जिन लोगों ने इसमें कमी की है वे सच पर थे कि उन्होंने ऐसे व्यर्थ हिस्से को निकाल दिया, जिसकी मौजूदगी **(नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक)** क़ुर्आन करीम की विशेषता को कम कर रही थी। यदि वह मौजूद रहता तो लोग ऐतराज़ करते कि इस हिस्से का क्या फ़ायदा है और उसे क़ुर्आन करीम में क्यों रखा गया है। मुझे इस विचारधारा पर एक घटना याद आती है। मैं छोटा था कि एक दिन आधी रात को कुछ शोर हुआ और लोग जाग उठे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक आदमी को भेजा कि बाहर जाकर देखो कि क्या बात है। वह हँसता हुआ वापिस आया और बताया कि एक दायी प्रसव कराकर वापिस आ रही थी कि नानक फ़क़ीर उसे मिल गया और उसने उस दायी को मारना शुरू कर दिया। उसने चीखना चिल्लाना शुरू किया, लोग एकत्र हो गए। जब उन्होंने नानक से पूछा कि तू उसे क्यों मार रहा है? तो उसने कहा कि यह मेरे सुरीन (नितम्ब) काटकर ले आयी है। इसलिए इसे मार रहा हूँ। लोगों ने कहा कि तेरे सुरीन तो सही सलामत हैं उन्हें तो किसी ने नहीं काटा, तो आश्चर्यचकित होकर कहने लगा,

अच्छा!!! फिर दायी को छोड़कर चला गया। यही हाल उन लोगों का है जो क़ुर्आन करीम में बदलाव के क़ायल हैं। वे ग़ौर नहीं करते कि क़ुर्आन करीम आज भी एक पूर्ण किताब है यदि इसका कोई हिस्सा ग़ायब हो गया होता तो इसकी पूर्णता में कमी आ जाती।

अत: क़ुर्आन करीम के पूर्ण किताब होने का प्रमाण स्वयं क़ुर्आन करीम है। यदि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु या कोई अन्य सहाबी इसकी एक आयत भी निकाल देते तो इसमें दोष आ जाता। लेकिन आश्चर्य है कि इस शोर के बावजूद कि इससे दस पारे कम कर दिए गए हैं, इसमें कोई कमी नज़र नहीं आती। इस दशा में तो बड़े-बड़े महत्वपूर्ण विषय ऐसे होने चाहिए थे कि जिनका क़ुर्आन करीम में कुछ वर्णन ही न होता, पर क़ुर्आन करीम में तो धर्म और रूहानीयत से सम्बन्ध रखने वाली सारी बातें मौजूद हैं।

(2) दूसरा विचार मुसलमानों में यह पैदा हो गया था कि क़ुर्आन का एक हिस्सा मन्सूख़ (निरस्त) है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसका उत्तर बहुत ही नए अन्दाज़ में दिया। जिन आयतों को लोग मन्सूख़ (निरस्त) ठहराते थे। उनके ऐसे-ऐसे अर्थ बयान किए कि जिनको सुनकर दुश्मन भी आश्चर्यचकित रह गए और आपके बताए हुए सिद्धान्त के अनुसार क़ुर्आन करीम की एक आयत भी ऐसी नहीं, जिसकी आवश्यकता सिद्ध न की जा सके। अब वही ग़ैर अहमदी जो कई आयतों को मन्सूख़ ठहराते थे उन्हीं आयतों को इस्लाम के विरोधियों के सामने प्रस्तुत करके इस्लाम की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। उदाहरणत: لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ (अल काफ़िरून - 7) जिसे मन्सूख़ कहा जाता था। अब उसी को विरोधियों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

(3) क़ुर्आन करीम के बारे में लोगों को तीसरी ग़लती यह लग रही थी कि मुसलमानों का अधिकतर भाग यह समझ रहा था कि इसके आध्यात्मज्ञानों का सिलसिला पिछले ज़माने में ख़त्म हो गया है। आपने इस भ्रम को भी दूर किया और इसके ख़िलाफ़ पूरे ज़ोर से आवाज़ उठाई और साबित किया कि पिछले ज़माने में इसके आध्यात्मज्ञान ख़त्म नहीं हुए बल्कि अभी भी ख़त्म नहीं हुए और भविष्य में भी ख़त्म न होंगे।

आप फ़रमाते है:-

"जिस तरह प्रकृति के रहस्य और चमत्कारपूर्ण विशेषताएँ किसी पूर्व युग में समाप्त नहीं हुईं बल्कि नई से नई पैदा होती जाती हैं। यही हाल क़ुर्आन की इन पवित्र बातों का है। ताकि ख़ुदा तआला की कथनी और करनी में अनुकूलता साबित हो।"

(इज़ाला औहाम भाग-1 पृष्ठ 258, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-3 पृष्ठ 258)

अत: बहुत सी भविष्यवाणियाँ जो इस युग से संबंधित थीं जिन्हें पूर्व युग के लोग नहीं समझते थे। आपने उन्हें क़ुर्आन से निकालकर समझाईं। जैसा कि

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ

(अल-तक्वीर-5)

की भविष्यवाणी थी। इस का अर्थ पहले के लोग यही करते थे कि क़यामत के दिन लोग ऊँटों पर सवारी न करेंगे, पर क़यामत को ऊंटनी तो क्या कोई भी चीज़ काम नहीं आएगी। बात यह है कि यह आयत भविष्यवाणी पर आधारित थी

और उस युग के लोगों के समक्ष वे परिस्थितियां न थीं जो इसके सही अर्थ करने में सहायक सिद्ध होतीं। इसलिए उन्होंने इसे क़यामत पर चस्पाँ कर दिया। वस्तुत: यह अन्तिम युग (अर्थात् कलयुग) से संबंधित एक भविष्यवाणी थी कि उस समय ऐसी सवारियों का आविष्कार हो जाएगा कि ऊँट बेकार हो जाएँगे। वे मौलवी जो हज़रत मसीह मौऊद की हर एक बात का विरोध करते हैं यदि उनको भी मोटर की जगह ऊँट की सवारी मिले तो वे कभी उस पर न चढ़ें। इसी तरह

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ

(अल-तक्वीर-6) कि भविष्यवाणी है अर्थात् जानवर जमा किए जाएँगे अर्थात् चिड़ियाघर बनाए जाएँगे। अत: इस युग में यह भविष्यवाणी पूरी हो गई।

इसी प्रकार यह भी अर्थ है कि पहले युग में क़ौमें एक दूसरे से डरती थीं और नफरत करती थीं। अब ऐसा समय आ गया है कि एक दूसरे से तार, रेल और जहाज़ों के द्वारा मिलने लग गई हैं।

इसी तरह यह भविष्यवाणी थी कि

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ

(अल-तक्वीर-7) कि नदियाँ सूख जाएँगी इसके बारे में कहा जाता था कि क़यामत के दिन भूकम्प आएँगे इस कारण नदियाँ सूख जाएँगी लेकिन क़यामत के दिन तो पृथ्वी ने ही तबाह हो जाना था फिर नदियों के सूखने का वर्णन क्यों किया गया था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इसका अर्थ यह बताया कि नदियों के सूखने से तात्पर्य यह था कि उन में से नहरें निकली जाएँगी।

इसी प्रकार यह भी भविष्यवाणी थी कि

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ

(अल-तक्वीर-8)

विभिन्न लोगों को आपस में मिला दिया जाएगा। इसका यह अर्थ किया जाता था कि क़यामत के दिन सारे लोगों को इकट्ठे कर दिया जाएगा। स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो जाएँगे। हालांकि क़यामत के दिन तो इस ज़मीन ने उथल-पुथल हो जाना है उस में लोग किस तरह इकट्ठे हो सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस की यह व्याख्या की कि इस आयत में ऐसे सामान और संसाधनों के निकलने की भविष्यवाणी की गई थी कि जिनके द्वारा यहाँ बैठा हुआ व्यक्ति दूर-दराज़ रहने वाले लोगों से बातें कर सकेगा। अब देख लो ऐसा ही हो रहा है या नहीं।

इसी तरह आपने क़ुर्आन करीम की विभिन्न आयतों से साबित किया कि उन में प्रकृति के ज्ञानों का सही और सच्चा वर्णन मौजूद है उदाहरणत:

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا

(अश्शम्स-2,3)

में इस ओर संकेत किया गया है कि चाँद स्वयं प्रकाशमान नहीं बल्कि सूरज से प्रकाश लेता है। तात्पर्य यह की आप ने बीसियों आयतों से बताया कि क़ुर्आन करीम में विभिन्न ज्ञानों की ओर संकेत है जिन्हें एक ही युग के लोग नहीं समझ सकते।बल्कि अपने समय पर उनकी पूरी समझ आ सकती है।

इसी तरह युग ज्यों-ज्यों उन्नति करता जाएगा क़ुर्आन करीम में से नए-नए ज्ञान निकलते चले जाएँगे। अत: आज आप के बताए हुए सिद्धांत के अनुसार अल्लाह तआला ने हमें क़ुर्आन करीम

का ऐसा ज्ञान दिया है कि कोई उस के सामने ठहर नहीं सकता।

देखो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह कितना बड़ा इन्क़लाब कर दिया। आप से पहले मौलवी यही कहा करते थे अमुक बात अमुक तफ़्सीर में लिखी है और यदि कोई नई बात प्रस्तुत करता तो कहते बताओ कि यह किस तफ़्सीर में लिखी है। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बताया कि जो ख़ुदा इन तफ़्सीरों के लेखकों को क़ुर्आन सिखा सकता है वह हमें क्यों नहीं सिखा सकता। इस तरह आप ने हमें एक कुएँ के मेंढक की हैसियत से निकालकर समुद्र का तैराक बना दिया।

(4) चौथी ग़लती लोगों को यह लग रही थी कि क़ुर्आन करीम के विषयों में कोई विशेष तार्तीब (क्रम) नहीं है। वे यह न मानते थे कि आयत के साथ आयत और शब्द के साथ शब्द का जोड़ है। बल्कि वे कभी-कभी पहले और बाद के नाम पर क़ुर्आन करीम की तर्तीब को बदल देते थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस खतरनाक दोष को भी दूर किया और बताया की पहले और बाद के नाम पर तर्तीब बदलना निस्संदेह जायज़ है पर कोई यह बताए कि क्या सही तर्तीब से वह श्रेष्ठ हो सकती है यदि तर्तीब तक़दीम व ताखीर से श्रेष्ठ होती है तो क़ुर्आन की ओर निकृष्ट बात क्यों मन्सूब करते हो?

आपने आर्यों के मुक़ाबले में दावा किया है कि क़ुर्आन में न केवल अर्थों के क्रम बल्कि शब्दों के क्रम को भी दृष्टिगत रखा गया है यहाँ तक कि नामों को भी युगानुसार यथास्थान क्रमानुसार बयान किया गया है सिवाए इसके कि विषय की क्रमिकता के कारण उन्हें आगे पीछे करना पड़ा और इसमें क्या सन्देह है कि अर्थक्रम शब्दक्रम पर प्रधान होता है।

(5) पांचवी ग़लती मुसलमानों में भी और दूसरों में भी क़ुर्आन करीम के अर्थों के बारे में यह पैदा हो गई थी कि क़ुर्आन करीम में विषयों की पुनरावृत्ति है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह साबित किया कि क़ुर्आन करीम में कदापि विषयों की पुनरावृत्ति नहीं है। बल्कि हर शब्द जो आता है वह नया विषय और नई विशेषता लेकर आता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुर्आन करीम की आयतों की पुष्प से उपमा दी है। अब देखो कि पुष्प में पत्तियों का हर नया घेरा देखने में पुनरावृत्ति लगता है लेकिन हर घेरा पुष्प की सुन्दरता की श्रेणी को पूर्ण कर रहा होता है। यदि पुष्प की पत्तियों के एक घेरे को तोड़ दिया जाए तो पुष्प क्या पूर्ण पुष्प रहेगा? नहीं। यही बात क़ुर्आन करीम में है। जिस तरह पुष्प में हर पत्ती नया सौन्दर्य पैदा करती है और ख़ुदा तआला पत्तियों की एक श्रृंखला के बाद दूसरी बनाता है और तब ख़त्म करता है जब उसका सौन्दर्य चरमोत्कर्ष को पहुँच जाता है। इसी तरह क़ुर्आन में हर बार का विषय एक नए अर्थ और नए उद्देश्य के लिए आता है और सारा क़ुर्आन करीम मिलकर एक पूरा वुजूद बनता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं यह सोचना कि क़ुर्आन करीम की आयतें एक दूसरे से अलग-अलग हैं ग़लत है। क़ुर्आन करीम की आयतों का उदाहरण ऐसा है जैसे कि शरीर की कणिकाएँ और सूरतों का उदाहरण ऐसा है जैसे शरीर के समस्त अंग। उदाहरणत: मनुष्य के 32

दाँत होते हैं। क्या कोई कह सकता है की दाँतों को 32 बार दोहराया गया है इसलिए 31 दाँत तोड़ डालना चाहिए और केवल एक दाँत रहने देना चाहिए। या मनुष्य के दो कान हैं। क्या कोई एक कान इसलिए काट देगा कि दूसरा कान क्यों बनाया गया है। या कोई कह सकता है कि मनुष्य की 12 पसलियाँ नहीं होनी चाहिएँ ग्यारह तोड़ देनी चाहिए। यदि कोई किसी की एक पसली भी तोड़ देगा तो वह भीषण मारपीट का दावा कर देगा। इसी तरह मनुष्य के शरीर पर लाखों बाल हैं। क्या कोई सारे बाल मुंड़वाकर केवल एक रखेगा ताकि पुनरावृत्ति न हो। ज़रा शरीर से पुनरावृत्ति दूर कर दो, फिर देखो क्या शेष रह जाता है?

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुर्आन करीम के अर्थ बयान करके पुनरावृत्ति का आरोप लगाने वालों को ऐसा जवाब दिया है कि मानो उनके दाँत तोड़ दिए हैं।

(6) छठवीं ग़लती क़ुर्आन करीम के बारे में मुसलमानों को यह लग रही थी कि क़ुर्आन करीम में इबरत हासिल करने के लिए पुराने क़िस्से बयान किए गए हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस भ्रम को भी दूर किया और साबित किया कि क़ुर्आन करीम में इबरत के लिए किस्से नहीं बयान किए गए यद्यपि क़ुर्आन के वर्णनों से इबरत भी मिलती है। लेकिन वस्तुत: वे उम्माते मुहम्मदिया के लिए भविष्यवाणियाँ हैं और जो कुछ इन वृत्तान्तों में वर्णन किया गया है वह ठीक उसी तरह भविष्य में होने वाला है। यही कारण है कि क़ुर्आन करीम पूरा क़िस्सा नहीं बयान करता बल्कि चुने हुए भाग का वर्णन करता है।

यह बात ऐसी स्पष्ट है कि क़ुर्आन करीम में वर्णित वृत्तान्तों के बहुत सारे भाग पूरे होते रहे हैं और भविष्य में भी पूरे होंगे। "नमला" की एक घटना क़ुर्आन करीम में वर्णित है उसके बारे में इतिहास से पता चलता है कि हारून रशीद के समय ऐसी ही घटना घटी। उस समय भी नमला क़ौम की शासक एक औरत थी जैसा कि सुलैमान अलैहिस्सलाम के समय में थी। उसने उपहार में हारून रशीद को सोने की एक थैली भेंट की और कहा कि हमें इस बात का गर्व है कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के समय में भी एक औरत ने ही उपहार भेंट किए थे। अब मैं भी औरत हूँ जो यह भेंट प्रस्तुत कर रही हूँ। इस दृष्टि से आप की सुलैमान अलैहिस्सलाम से तुलना हो गई। हारून रशीद को भी इस पर गर्व हुआ कि उनकी सुलैमान अलैहिस्सलाम से तुलना की गई।

(7) सातवां सन्देह यह पैदा हो गया था कि क़ुर्आन करीम में इतिहास के विरुद्ध बातें हैं। यह सन्देह मुसलमानों में भी पैदा हो गया था और दूसरों में भी। सर सैयद अहमद जैसे विद्वान आदमी ने भी इस ऐतिराज़ से घबराकर यह उत्तर दिया कि क़ुर्आन करीम में औपचारिकताओं से काम लिया गया है। अर्थात् ऐसे वर्णनों या अक़ीदों को दलील के तौर पर प्रस्तुत किया गया है जो यद्यपि सही नहीं है मगर मुखातब (सम्बोधित) उनकी प्रामाणिकता का क़ायल है। इसलिए उसके समझाने के लिए उन्हें सही मानकर प्रस्तुत कर दिया गया है।

लेकिन यह जवाब वस्तुत: हालात को और भी खतरनाक कर देता है। क्योंकि प्रश्न उठ सकता है कि किस ज़रिया से हमें ज्ञात हुआ कि क़ुर्आन करीम में कौन सी बात औपचारिकता के तौर पर

प्रस्तुत की गई हैं और कौन सी सच्चाई के तौर पर। इस दलील के अनुसार यदि कोई व्यक्ति सारे क़ुर्आन को ही औपचारिकताओं की एक क़िस्म ठहरा दे तो उसकी बात को इन्कार नहीं किया जा सकता और दुनिया का कुछ भी शेष नहीं रहता। औपचारिक दलील के लिए आवश्यक है कि स्वयं लेखक ही बताए कि वह औपचारिक है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उपरोक्त ऐतिराज़ के जवाब में औपचारिकता के सिद्धांत को नहीं अपनाया बल्कि उसका खंडन किया और यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि क़ुर्आन ख़ुदा तआला का कथन है। उस अन्तर्यामी की ओर से जो कुछ बयान हुआ है वह नि:सन्देह सत्य है और उसके मुक़ाबले में दूसरी ऐतिहासिक बातों को प्रस्तुत करना जो अपनी कमज़ोरी पर स्वयं साक्षी है बुद्धि के विपरीत है। हाँ यह अनिवार्य है कि क़ुर्आन करीम जो कुछ बयान करता है उसके अर्थ खुद क़ुर्आन करीम के बताये हुए नियमों के अनुसार किए जाएँ। उसे एक कहानियों की किताब ना बनाया जाए और उसकी युक्तिपूर्ण शिक्षा को सरसरी बातों का संग्रह न समझ लिया जाए।

(8) आठवीं ग़लती जिसका लोग शिकार हो रहे थे यह थी कि क़ुर्आन करीम कुछ ऐसे छोटे-छोटे विषय बयान करता है जिनका बयान करना मनुष्य के ज्ञान और मानसिक उन्नति के लिए लाभदायक नहीं हो सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसे भी ग़लत साबित किया और बताया कि क़ुर्आन करीम में कोई व्यर्थ विषय बयान नहीं हुआ। बल्कि जितने अर्थ या वृत्तान्त वर्णन किए गए हैं वे सब बहुत महत्वपूर्ण हैं। मैं उदाहरण के तौर पर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के एक वर्णन को लेता हूँ। क़ुर्आन करीम में लिखा है कि उन्होंने एक ऐसा महल बनवाया था जिसका फर्श शीशे का था और उसके नीचे पानी बहता था। जब मलिका सबा उनके पास आई तो उन्होंने उसमें दाख़िल होने को कहा लेकिन मलिका ने समझा कि उसमे पानी है और वह डर गई। इस पर सुलैमान अलैहिस्सलाम ने कहा, डरो नहीं यह पानी नहीं बल्कि शीशे के नीचे पानी है। क़ुर्आन करीम के शब्द यह हैं :-

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝

(अन्नमल-45)

अर्थात् सबा क़ौम की मलिका को हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ से कहा गया कि इस महल में दाख़िल हो जाओ। जब वह दाख़िल

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

होने लगी तो उसे लगा कि फ़र्श की जगह गहरा पानी है इस पर उसने अपनी पिंडलियों से कपड़ा ऊपर कर लिया और घबरा गई। तब सुलैमान ने उसे कहा कि तुम्हें भ्रम हुआ है यह पानी नहीं है यह शीशे का फ़र्श है और पानी इसके नीचे है। तब उसने कहा, हे मेरे रब्ब! मैंने अपने आप पर अत्याचार किया, अब मैं सुलैमान के साथ समस्त लोकों के रब्ब, अल्लाह पर ईमान लाती हूँ।

विभिन्न भाष्यकार इन आयतों की अजीबोगरीब व्याख्या करते हैं। कई यह कहते हैं कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम उससे विवाह करना चाहते थे लेकिन जिन्नों ने उन्हें बताया कि उसकी पिंडलियों में बाल हैं तो हज़रत सुलैमान ने उसकी पिंडलियाँ देखने के लिए इस तरह का महल बनवाया। लेकिन जब उसने पाजामा उठाया तो देखा कि उसकी पिंडलियों पर बाल नहीं हैं।

कई कहते हैं पिंडलियों के बाल देखने के लिए हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने इतना बड़ा प्रबंध क्या करना था, बल्कि असल बात यह है कि उन्होंने उस मलिका का सिंहासन मँगाया था। इस पर उन्होंने सोचा कि मेरी तो तौहीन हुई है कि मैंने उससे सिंहासन माँगा। उस शर्मिंदगी को दूर करने के लिए हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने ऐसा क़िला बनवाया ताकि वह अपनी प्रतिष्ठा क़ायम कर सकें। पर क्या कोई बुद्धिमान यह कह सकता है कि यह बातें इतनी महत्वपूर्ण हैं कि ख़ुदा की किताब और विशेषकर आख़िरी शरीअत की कामिल किताब (अर्थात् क़ुर्आन) में उन बातों का वर्णन किया जाए जिनका न धर्म से संबंध है न ज्ञान से। क्या बुद्धि यह स्वीकार कर सकती है कि ख़ुदा तआला के नबी ऐसे कामों में जिनको यहाँ बयान किया गया है लिप्त हो सकते हैं?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इस आयत की जो व्याख्या की है उसने वास्तविकता स्पष्ट कर दी है और स्पष्ट तौर पर सिद्ध हो गया है कि क़ुर्आन करीम में जो कुछ बयान हुआ है वह ईमान और अध्यात्म की उन्नति के लिए है। आप फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन करीम से ज्ञात होता है कि मलिका-ए-सबा एक मुश्रिका अनेकेश्वरवादी औरत थी और सूर्य की पूजा करती

थी। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम उसे समझाना चाहते थे और शिर्क से विमुख कराना चाहते थे। इसलिए आप ने शब्दों में दलील देने के साथ-साथ यह ढंग भी अपनाया कि व्यवहारिक दृष्टि से भी उसके अक़ीदा की ग़लती उस पर स्पष्ट करें। अत: उससे मुलाक़ात के लिए एक ऐसा किला बनवाया जिसका फ़र्श शीशे का था और उसके नीचे पानी बहता था। जब मलिका उस पर चलने लगी तो उसे पानी की झलक दिखाई दी जिसे देखकर वह डर गई और अपना पाजामा ऊँचा कर लिया (अरबी शब्द "कशफ़ साक़" के दोनों ही अर्थ हैं) इस पर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उसे तसल्ली दी और कहा कि जिसे तुम पानी समझती हो वह तो शीशे का फ़र्श है पानी उसके नीचे है। चूँकि आप पहले शाब्दिक दलीलों से उस पर शिर्क की ग़लती साबित कर चुके थे। अत: वह तुरन्त समझ गई कि उन्होंने एक व्यवहारिक उदाहरण भी देकर मुझ पर शिर्क की वास्तविकता स्पष्ट कर दी है कि जिस तरह पानी की झलक शीशे में से तुझे दिखाई देती है और तूने उसे पानी समझ लिया है इसी तरह ख़ुदा तआला का नूर (प्रकाश) सूरज चाँद सितारों इत्यादि में से झलक रहा है और लोग उन्हें ख़ुदा ही समझ बैठते हैं। हालाँकि वह ख़ुदा तआला के नूर (प्रकाश) से नूर ले रहे होते हैं। अत: इस दलील से वह तुरन्त प्रभावित हुई और बड़े ज़ोर से कहने लगी कि

मैं उस ख़ुदा पर ईमान लाती हूँ जो समस्त लोकों का रब्ब है अर्थात् सूर्य इत्यादि का भी। सब उसी से नूर पा रहे हैं। मूलत: नूर देने वाला वही एक है।

अब देखो यह कैसा महत्त्वपूर्ण आधारभूत और गहरा विषय है और इस पर एक किताब लिखी जा सकती है। जबकि पहले यह कहा जाता था कि बालों वाली पिंडलियाँ देखने के लिए महल बनवाया गया था। क्या जिन औरतों की पिंडलियों पर बाल होते हैं उनकी शादी नहीं होती? क्या नबी ऐसे कर्मों में लिप्त हो सकते हैं? अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुर्आन करीम के विषयों की प्रतिष्ठा को बढ़ाया और उसकी ओर जो ग़लत बातें मन्सूब की जाती थीं उनसे उसे रहित ठहराया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Valiyuddin
+91 99000 77866

FAWWAZ OUD & PERFUMES

No .44 Castle Street, Ashoknagar,
Opp.Hotel Empire, Bengaluru- 560 025.
Phone: +91 80412 41414
Mail: valiyuddin@fawwazperfumes.com
www.fawwazperfumes.com

فـــواز
FAWWAZ

कर न कर

डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब

(हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब ने अहमदियों की तरबियत के लिए आसान शब्दों में एक किताब " कर न कर" लिखी है। इस किताब का एक अंश पाठकों के लिए इस आशा के साथ प्रस्तुत किया जाता है कि वे इस का अनुकरण करेंगे। सम्पादक)

* तू ख़ुदा तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) की गवाही दे और स्वंय भी उसे समझ ले ।

* तू पांच समय की नमाज़ समय पर और जमाअत के साथ अदा कर ।

* तू रमज़ान के महीने के रोज़े रख यदि बीमार या मुसाफिर नहीं ।

* तू ज़कात अदा कर यदि तू मालदार है (अर्थात यदि तेरे धन पर ज़कात अनिवार्य है)।

* तू हज कर यदि तुझ पर फ़र्ज़ है ।

* तू अपने ईमान की रक्षा कर क्योंकि यह अत्यन्त मूल्यवान है ।

* चाहिए कि तेरी रूह ख़ुदा की मस्जिदों में लगी रहे ।

* चाहिए कि तेरा दिल ख़ुदा को याद करने से इत्मीनान पाए ।

* तू केवल हलाल, पसन्दीदा और पवित्र भोजन खा।

* तू हमेशा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयास कर ।

* तू अध्यात्मज्ञानी बन ।

* तू कभी ख़ुदा तआला की शिकायत न कर ।

* तू जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वस्ल्लम का नाम ले या सुने तो सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कह ।

* तू जब किसी अन्य पैग़म्बर का नाम ले तो कह कि अलैहिस्सलाम (उस पर सलामती हो) ।

* तू जब किसी सहाबी का नाम ले तो कह रज़ियल्लाहो अन्हो ।

* जब तू किसी मृत्यु प्राप्त धार्मिक महापुरुष का नाम ले तो रहमतुल्लाह अलैहि कह ।

* तू ख़ुदा को अपना और सम्पूर्ण विश्व का स्रष्टा एवं पालनहार होने पर विश्वास कर ।

* शरिअत के विरुद्ध फ़ैशनों को त्याग कर तू जिस देश में हो वहां का फ़ैशन धारण कर सकता है ।

* तेरे लिए समस्त ज़रूरी धर्म, क़ुरआन, हदीस और मसीह मौऊद (अ) की पुस्तकों में मौजूद है ।

* हे स्त्री ! सार्वजनिक मार्गों में ऐसा पर्दा न कर कि जब तू बाज़ार में निकले तो तेरा एक ओर का चेहरा लोग जाते हुए देखें और दूसरी ओर का वापिस आते हुए ।

* तू हज़रत मुहम्मद स.अ.व. के खातमुन्नबिय्यीन होने पर ईमान ला ।

* तू हज़रत मसीह मौऊद (अ) को ख़ुदा का ऐसा नबी और रसूल होने पर विश्वास कर जो आप (स) के उम्मती नबी हैं अर्थात् आप (स) के पूर्ण अनुसरण से उनको नबुव्वत मिली है ।

* तू हज़रत मौलाना नूरुद्दीन रज़ियल्लाहो अन्हो को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का प्रथम ख़लीफा मान।

* तू हज़रत मिर्जा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दूसरा ख़लीफा और मुस्लेह मौऊद मान ।

* तू अहमदी के अतिरिक्त कभी किसी अन्य के

पीछे नमाज़ न पढ़ ।

* तू ग़ैर अहमदी का जनाज़ा न पढ़ ।

* तू कभी अहमदी स्त्री का निकाह किसी ग़ैर अहमदी पुरुष से न होने दे ।

* तू इस्लाम या अहमदियत के प्रचार से कभी सुस्त न हो।

* याद रख कि ख़ुदा के निकट सारी इज़्ज़त तक़्वा (संयम) में है ।

* तू अपने ख्वाबों की क़द्र कर और उनको लिख लिया कर ।

* तू अपने ख़ुदा को प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान समझ ।

* तू अपने ख़ुदा को अन्तर्यामी (परोक्ष का ज्ञाता) समझ ।

* तू अपने ख़ुदा को अत्यन्त दयालु और कृपालु समझ ।

* तू पवित्र क़ुरआन पर चिंतन किया कर ।

* तू विश्वास रख कि तेरा ख़ुदा कभी अत्याचार नहीं करता ।

* तू ईमान ला कि सब नबी निर्दोष (मासूम) हैं ।

* तू ईमान ला कि तेरा ख़ुदा हर दोष और त्रुटि से रहित है ।

* तू ईमान ला कि तेरे ख़ुदा की हर विशेषता और हर काम प्रशंसनीय है ।

* तू विश्वास कर कि ख़ुदा तआला का कोई साझीदार नहीं ।

* तू प्रतिदिन प्रात:काल पवित्र क़ुरआन की तिलावत (पाठ) आवश्य किया कर ।

* तू अपने ख़ुदा के साथ अपने प्राण, सन्तान, पत्नी,धन तथा प्रत्येक वस्तु से अधिक प्रेम कर ।

* तू ख़ुदा की नेमतों का शुक्रिया अदा करने की आदत डाल ।

* तू आज्ञापालन कर ।

* तू ईमान ला कि तेरे ख़ुदा का कोई कार्य युक्ति और रहस्य से खाली नहीं ।

* तू ख़ुदा तआला से अपने एकान्त में भी डर ।

* तू धर्म में विवेक से काम ले और आँख मूँदकर अनुसरण करने से बच ।

* तू रात के अन्तिम समय में तहज्जुद पढ़ने की आदत डाल ।

* तू अपने प्रत्येक कार्य से पूर्व इस्तिखार: कर अर्थात् ख़ुदा से सहायता की दुआ मांग ।

* तू तावीज़ – गन्डे और तंत्र-मंत्र से बच ।

* तू अल्लाह के निशानों का आदर – सम्मान कर।

* तू हमेशा धर्म को सांसारिकता पर प्राथमिकता दे।

* तू प्रत्येक विपत्ति और आवश्यकता के समय ख़ुदा के समक्ष गिर जाने और दुआ मांगने की आदत डाल।

* यदि तू हमेशा सच बोलने की आदत डाले तो तुझे स्वप्न भी सच्चे ही आएंगे ।

* तू ख़ुदा पर ईमान ला ।

* तू फ़रिश्तों पर ईमान ला।

* तू ख़ुदा की सब किताबों पर ईमान ला ।

* तू ख़ुदा के सब रसूलों पर ईमान ला ।

* तू क़यामत, प्रतिफल तथा दण्ड एवं स्वर्ग और नर्क पर ईमान ला ।

* तू तक़दीर पर ईमान ला ।

* तू धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने में सदैव प्रयासरत रह।

* तू अपनी कमज़ोरियों और पापों के लिए प्रतिदिन क्षमा याचना किया कर ।

* तू अपने साथ अपने बुज़ुर्गों और परिजनों तथा जमाअत के लिए भी दुआ किया कर ।

* तू इस्लाम और अहमदियत की उन्नति के लिए सदैव प्रयासरत रह ।

* तू प्रतिदिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद पर सलामती भेजा कर ।

* तू पवित्र क़ुरआन के आदेशों को हर चीज़ पर प्रधानता दे।

* तू अपनी प्रकृति अपने ख़ुदा के स्वभाव की तरह बना ।

* चैकीदारी या शिकार इत्यादि की आवश्यकता के अतिरिक्त शौक के तौर पर तू कुत्ता न पाल ।

* तू बिस्मिल्लाह पढ़कर भोजन करना आरंभ किया कर।

* तू भोजन करके हमेशा अलहम्दोलिल्लाह कहा कर।

* तू प्रयास कर कि तुझे प्रत्येक अवसर की मस्नून दुआ याद हो।

* तू नेकियां कर और उनके करने का आदेश दिया कर।

* तू निकृष्ट बातों से बच और बचने का आदेश दे।

* तू अपने स्वामी का वफ़ादार सेवक बन।

* तू ख़ुदा के लिए प्रेम और ख़ुदा के लिए बैर का व्यवहार कर।

तू बुज़ुर्ग और सदाचारी लोगों की संगत में बैठा कर ।

* तू पैग़म्बरों तथा इस्लाम के वलियों की जीवनियों को अपने अध्ययन में रखा कर।

* तेरा रौब नेकी के कारण हो न कि अभिमान या धन के कारण।

* तू हर मिलने वाले को पहले सलाम करने का प्रयास कर।

* तू निजात (मुक्ति) को ख़ुदा की कृपा पर निर्भर समझ न कि केवल कर्म पर, किन्तु कर्म को कृपा का चुम्बक समझ।

* तू मुसलमानों के जनाज़ों मे यथासंभव सम्मिलित हो ।

* तू दिन में कुछ समय ख़ुदा के समक्ष अकेला बैठने की आदत डाल ।

* तू अपने उपकार करने वालों के लिए दुआ किया कर ।

* तू अपने पर पवित्र क़ुरआन का अनुवाद और आशय सीखना अनिवार्य कर ले।

* तू सृष्टि की पूजा न कर।

* तू कब्र की पूजा न कर।

* तू ताज़िय: परस्ती (ताज़िय:दारी) न कर।

* तू पीर परस्ती न कर।

* तू पुनीत स्थानों एवं अवशेषों की पूजा न कर।

* तू मूर्तियों की पूजा न कर।

* तू हरामखोरी न कर क्योंकि हराम खाने वाले की दुआ स्वीकार नहीं होती।

* तू यथासंभव दिन में एक बार अपने ख़ुदा के सामने अवश्य आंसुओं से रो लिया कर।

* तू कब्रस्तानों में भी जाकर सीख प्राप्त किया कर।

* तू दुनिया की चिज़ों में ख़ुदा तआला की कारीगरी की सुन्दरता और उसके औचित्य तलाश किया कर।

☆ ☆ ☆

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

Prop.
Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786
9556122405

KING TENT HOUSE

At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

गुलदस्ता

नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

"नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है और मोमिन की मेराज (चरमोन्नति) है। खुदा तआला से दुआ मांगने का सर्वश्रेष्ठ साधन नमाज़ है। खुदा तआला की स्तुति करने और अपने गुनाहों के माफ़ कराने की मिश्रित सूरत का नाम नमाज़ है। उसकी नमाज़ कदापि नहीं होती जो इस उद्देश्य को सामने रख कर नमाज़ नहीं पढ़ता। अत: नमाज़ बहुत ही अछी तरह पढ़ो। खड़े हो तो इस प्रकार की तुम्हारी सूरत साफ़ बता दे, कि तुम खुदा की इताअत और फरमांबरदारी में हाथ बाँधे खड़े हो और झुको तो ऐसे, जिससे साफ़ प्रतीत हो कि तुम्हारा दिल झुकता है और सज्दा करो तो उस आदमी की भांति जिसका दिल डरता हो और नमाज़ों में अपने दीन और दुनिया के लिए दुआ करो"।

(अल हकम 31मई 1903)

इस्लाम के अरकान

इस्लाम के पाँच बुनियादी 'अरकान' हैं। अर्थात 1.कलिमा तय्यबा 2. नमाज़ 3. रोज़ा 4. ज़कात 5. हज

कलिमा तय्यबा

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

अर्थात अल्लाह के अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके रसूल हैं।

नमाज़

प्रतिदिन पाँच बार- फ़ज्र, ज़ुहर, असर, मग़रिब और इशा के समय नमाज़ पढ़ना फर्ज़ है। नमाज़ और उसका अनुवाद आगे दिया जाएगा।

रोज़ा

रमज़ान के रोज़े रखना हर बालिग़ मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज़ है। बीमार और मुसाफिर दूसरे अवसर पर रोज़े रख कर गिनती पूरी कर सकते हैं। गर्भवती या दूध पिलाने वाली औरत पर रोज़े फर्ज़ नहीं, वे सामर्थ्यानुसार एक ग़रीब को रोज़ खाना खिलायें। सदा बीमार रहने वालों और बहुत बूढ़े लोगों पर भी रोज़ा फ़र्ज़ नहीं। वे भी सामर्थ्यानुसार हर रोज़ एक ग़रीब को खाना खिलायें। भूल से कुछ खा पी लेने से रोज़ा नहीं टूटता। यदि बिना किसी जायज़ कारण के कोई रोज़ा तोड़ता है तो उसका प्रायश्चित एक ग़ुलाम को आज़ाद करना या साठ दिन लगातार रोज़े रखना या साठ ग़रीबों को खाना खिलाना है। यदि सफ़र करना किसी की नौकरी या व्यवसाय का हिस्सा है तो उसे रोज़ा रखना चाहिये। बच्चों को रोज़ा नहीं रखना चाहिये। रोज़े की हालत में दातुन करना, गीला कपड़ा ऊपर लेना बदन पर तेल लगाना, खुशबू लगाना या सूंघना और थूक निगलना इत्यादि जायज़ है।

रमज़ान में इशा की नमाज़ के बाद 'तरावीह' की नमाज़ भी पढ़ी जाती है। असल में यह 'तहज्जुद'

की नमाज़ है, जो सहूलियत के लिए इशा के बाद पढ़ ली जाती है।

ज़कात

इस्लाम की पवित्र किताब क़ुर्आन मजीद के अनुसार ज़कात देने से इंसान के धन में बरकत पड़ती है। और अल्लाह तआला उसे अधिक कर देता है। ज़कात 'बैतुलमाल' में ही देनी चाहिए। वसीयत और दूसरे चन्दों के बावजूद ज़कात फ़र्ज़ है। ज़कात सोने, चांदी, सिक्के, ऊँट, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, दुंबा इत्यादि और सभी प्रकार के अनाज, खजूर, अंगूर और व्यापार के माल पर होती है। हर वस्तु की ज़कात की दर निश्चित है। फ़सल में पकने पर केवल एक बार ज़कात ज़रूरी है। परन्तु बाकी चीज़ों का एक वर्ष तक पास रहना आवश्यक है।

ज़कात की दरें

52 तोला 6 माशा (अर्थात साढ़े बावन तोला) चांदी पर चालीसवाँ भाग। परन्तु पहने जाने वाले ज़ेवर जो कभी-कभी गरीबों को पहनने के लिए दिये जाते हों उन-पर ज़कात नहीं। सिक्के और करंसी पर 52 तोला 6 माशा (5.1/2 तोला) की कीमत के बराबर है। जो जानवर जोतने या लादने के काम आते हों और जिस ज़मीन का लगान सरकार लेती है। उस पर ज़कात नहीं। ज़कात योग्य अनाज की मात्रा 22 मन 25 सेर है। यदि फसल के लिए पानी कीमत अदा करके लिया गया हो तो बीसवां भाग, नहीं तो 10 वां भाग है। यदि किसान भूमि का मालिक हो तो ज़कात की अदायगी उसके ज़िम्मे है यदि बटाई पर हो तो ज़कात सामूहिक तौर पर देय होगी।

हज

प्रत्येक मुसलमान जो स्वस्थ हो और सफ़र खर्च सहन कर सकता हो और रास्ते में शान्ति हो तो उस पर जीवन में एक बार मक्का शहर में जाकर हज करना फर्ज़ है। यदि कोई स्वयं हज न कर सकता हो तो दूसरा कोई उसके बदले में हज कर सकता है। हज निश्चित तिथियों में ही होता है जबकि 'उमरा' साल में किसी भी समय किया जा सकता है। मृत्युप्राप्त या अपंग लोगों की ओर से भी हज कराया जा सकता है। परन्तु दूसरे की ओर से हज वही कर सकता है जिसने पहले अपना हज कर लिया हो।

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536
MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER
Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE
Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443
Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers
Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

नमाज़

नमाज़ अल्लाह का बहुत बड़ा इनाम है। यह एक महान इबादत और दुआ है। नमाज़ अल्लाह के बेशुमार एहसानों और उपकारों का शुक्रिया अदा करने का नाम है, जो उसने हम पर अपनी कृपा से किए हैं और कर रहा है। नमाज़ से दु:ख और तकलीफ़ें दूर होती हैं और गुनाहों का मैल धुल जाता है। इस से मनुष्य सभी प्रकार की बुराइयों, गुनाहों और अश्लील बातों से रुक जाता है और अल्लाह और उसके बन्दे के बीच सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

नमाज़ पढ़ने के समय

एक दिन में पाँच अलग-अलग समयों पर नमाज़ पढ़ना अनिवार्य है। अत: प्रत्येक मुसलमान को दिन में समयानुसार पाँच बार नमाज़ अवश्य पढ़नी चाहिए। इन नमाज़ों के नाम और समय निम्नलिखित हैं।

फ़ज्र की नमाज़

यह नमाज़ प्रात: (पौ फटने) से लेकर सूरज निकलने से पहले-पहले समय के बीच पढ़ी जाती है। इसकी दो 'रक्अत' सुन्नत और दो फर्ज़ होती हैं।

ज़ुहर की नमाज़

यह नमाज़ दोपहर के बाद जब सूरज ढलना आरम्भ हो जाता है, पढ़ी जाती है। इस नमाज़ में पहले चार रक्अत सुन्नत फिर चार रक्अत फर्ज़ और फिर दो रक्अत सुन्नत पढ़ी जाती हैं। इसके अतिरिक्त दो रक्अत नफ़्ल भी पढ़ सकते हैं।

अस्त्र की नमाज़

यह नमाज़ ज़ुहर के समय के समाप्त होने से लेकर धूप के पीला होने के बीच के समय में पढ़ी जाती है। इस नमाज़ की केवल चार रक्अत फर्ज़ होती हैं। अगर कोई चाहे तो फ़र्ज़ों से पहले चार रक्अत सुन्नतें पढ़ सकता है।

मग़रिब की नमाज़

जब सूरज डूब जाता है तब यह नमाज़ पढ़ी जाती है। इसकी तीन रक्अत फर्ज़ और दो सुन्नत होती हैं। इसी तरह दो रक्अत नफ़िल भी पढ़ सकते हैं।

इशा की नमाज़

मग़रिब की नमाज़ के लगभग आधे घंटे बाद से इस नमाज़ का समय शुरू हो जाता है और आधी

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal.com flipkart.com
amazon.com paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS

Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address:1/1/129. Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamat, Hotel, Secunderabad-3

रात तक के मध्य यह नमाज़ पढ़ी जा सकती है। इस नमाज़ की चार रक्अत फर्ज़ उसके बाद दो सुन्नत और तीन 'वितर' होती हैं। दो रक्अत नफ़िल सुन्नत के पश्चात् और दो वितर के बाद पढ़ सकते हैं।

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ पढ़ने से पहले निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1.समय 2. शरीर, कपड़ों और जगह की सफ़ाई 3. शरीर का ढका होना 4. मुँह क़िबला की ओर होना।

नमाज़ की 'नीयत' अर्थात् जो नमाज़ फर्ज़ या सुन्नत पढ़नी हो उसकी नीयत की जाय।

नफ़ली नमाज़ें

नमाज़-ए-तहज्जुद- तहज्जुद की नमाज़ आधी रात के बाद से पौ फटने तक तहज्जुद की नमाज़ का समय होता है। यह दो-दो रक्अत के रूप में कुल आठ रक्अतें पढ़ी जाती हैं। समय कम हो तो दो रक्अत भी पढ़ी जा सकती हैं। क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने इसकी ओर विशेष ध्यान दिलाया है क्योंकि उस समय की दुआओं में एक खास असर होता है।

नमाज़-ए-तरावीह- रमज़ान के महीने में इशा की नमाज़ के बाद आठ रक्अत नमाज़-ए-तरावीह पढ़ी जाती है। कुछ लोग बीस रक्अत भी पढ़ते हैं। यह नफ़ल नमाज़ है इस पर ऐतराज़ नहीं करना चाहिए, जो बीस पढ़ना चाहे वह बीस पढ़ ले।

नमाज़-ए-इस्तिस्क़ा- अकाल पड़ने और बारिश न होने की स्थिति में दिन के समय खुले मैदान में इमाम चादर ओढ़कर दो रक्अत नमाज़ पढ़ाये। क़िरअत ऊँची हो और नमाज़ के बाद हाथ उठाकर इमाम दुआ कराए।

नमाज़-ए-इश्राक़- सूरज निकलने के बाद से कुछ दिन चढ़े तक यह नमाज़ 2 रक्अत पढ़ी जाती है।

नमाज़-ए-चाश्त- इश्राक से थोड़ी देर बाद चार से बारह रक्अतें तक नफ़िल पढे जाते हैं।

नमाज़-ए-ज़वाल- जब सूरज ढलना आरम्भ हो जाए तो दो से चार रक्अत नमाज़-ए-ज़वाल पढ़ी जाती है।

नमाज़-ए-अव्वाबीन- मग़रिब की नमाज़ के

Asifbhai Mansoori
9998926311

Sabbirbhai
9925900467

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover

E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES
INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

बाद से इशा की अज़ान के बीच जो नवाफ़िल अदा किए जाते हैं उसे नमाज़-ए-अव्वाबीन कहते हैं।

नमाज़-ए-कुसूफ़ व ख़ुसूफ़- सूर्य ग्रहण को कुसूफ़ और चन्द्र ग्रहण को ख़ुसूफ़ कहते हैं। इस अवसर पर शहर के सब लोगों को मस्जिद या खुले मैदान में जमा होकर 2 रक्अत नमाज़ पढ़नी चाहिए। हर रक्अत में कम से कम दो रुकू किए जाएँ अर्थात् क़िरअत के बाद दूसरा रुकू किया जाए फिर सज्दा हो। इस नमाज़ के रुकू और सज्दे लम्बे होने चाहिएँ। नमाज़ के बाद इमाम खुत्बा दे जिसमें तौबा इस्तिग़फ़ार और कर्मों के सुधार हेतु नसीहत की जाए।

नमाज़-ए-इस्तिख़ारा- महत्वपूर्ण धार्मिक और सांसारिक काम शुरू करने से पहले उसके बा बरकत होने और सफ़लता पाने के लिए यह नमाज़ पढ़ी जाती है। इसमें रात को सोने से पहले दो रक्अत 'नफ़िल' पढ़े जाते हैं जिसमें अन्य दुआओं के साथ-साथ यह दुआ भी पढ़ी जाती है।

☆ ☆ ☆

अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत के official Social account

1-टवीटर @ Islam in IND

2-फेस बुक @ AMJIndia

3-इंसटाग्राम @ islamindia

(इन्चार्ज नूरुल इस्लाम विभाग)

हर तरफ आवाज़ देना है हमारा काम आज
जिस की फितरत नेक है वह आएगा अंजाम कार।

आज का ज़माना सोशल माडिया का ज़माना है जो बात पहले जमाना में डाक और ख़त के द्वारा हफ्तों में पहुंचती थी अब कम्पयूटर की एक क्लिक से दुनिया के किसी भी कोने में एक सैकण्ड में पहुंच जाती है। ऐसे में आप का फर्ज़ है कि इस्लाम अहमदियत की तालीम को सारी दुनिया में पहुंचाने में अपनी भूमिका अदा करें

☆ ☆ ☆

METRO PALSTIC PRODUCTS

YOUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail youba.metro@yahoo.com

(AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY)

H.O & FACTORY : 20 A RADHANATH CHOUDHURY ROAD
KOLKATA 700015, PH:2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

ग़ज़ल
उबैददुल्लाह अलीम

तेरे प्यार में रुसवा होकर जाएँ कहाँ दीवाने लोग
जाने क्या क्या पूछ रहे हैं यह जाने पहचाने लोग

हर लम्हा एहसास की सहबा रूह में ढलती जाती है
जीस्त का नशा कुछ कम हो तो हो आयें मैखाने लोग

जैसे तुम्हें हमने चाहा है कौन भला यूं चाहेगा
माना और बोहत आयेंगे तुमसे प्यार जताने लोग

यूं गलियों बाज़ारों में आवारा फिरते रहते हैं
जैसे इस दुनिया में सभी आए हों उम्र गंवाने लोग

आगे पीछे दायें बाएँ साए से लहराते हैं
दुनिया भी तो दश्त-ऐ-बला है हम ही नहीं दीवाने लोग

कैसे दुखों के मौसम आए, कैसी आग लगी यारो
अब सहराओं से लाते हैं फूलों के नजराने लोग

कल मातम बे-कीमत होगा, आज इनकी तौकीर करो
देखो खून-ऐ-जिगर से क्या क्या लिखते हैं अफ़साने लोग